

“मीठे बच्चे - तुम ब्राह्मण अभी बहुत ऊंची यात्रा पर जा रहे हो, इसलिए तुम्हें डबल इंजन मिली है, दो बेहद के बाप हैं तो दो मां भी हैं”

प्रश्न:- संगमयुग पर कौन सा टाइटिल तुम बच्चे अपने ऊपर नहीं रखवा सकते?

उत्तर:- हिज होलीनेस वा हर होलीनेस का टाइटिल तुम बी.के. अपने पर नहीं रखवा सकते या लिख सकते क्योंकि तुम्हारी आत्मा भल पवित्र बन रही है लेकिन शरीर तो तमोप्रधान तत्वों से बने हुए हैं। यह बड़ाई अभी तुम्हें नहीं लेनी है। तुम अभी पुरुषार्थी हो।

गीत:- यह कहानी है दीवे और तूफान की.....

ओम् शान्ति। बेहद का बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। यह तो बच्चे समझ गये हैं कि बेहद के दो बाप हैं तो मां भी जरूर दो होंगी। एक जगदम्बा, दूसरी यह ब्रह्मा भी माता ठहरी। दोनों बैठ समझाते हैं तो तुमको जैसे डबल इंजन मिल गई। पहाड़ी पर जब गाड़ी जाती है तो डबल इंजन लगाते हैं ना! अब तुम ब्राह्मण भी ऊंची यात्रा पर जा रहे हो। तुम जानते हो अभी घोर अस्थियारा है। जब अन्त का समय आता है, तो बहुत हाहाकार होता है। दुनिया बदलती है तो ऐसे होता है। जब राजाई बदली होती है तो भी लड़ाई मारामारी होती है। बच्चे जानते हैं कि अब नई राजधानी स्थापन हो रही है। घोर अस्थियारे से फिर घोर सोझरा हो रहा है। तुम इस सारे चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते हो तो तुमको फिर औरों को भी समझाना है। बहुत मातायें अथवा बच्चियां हैं जो स्कूल में पढ़ाती हैं वह भी बच्चों को बैठ अगर बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाये तो इसमें कोई गवर्मेन्ट नाराज नहीं होगी। उन्हीं के बड़ों को भी समझाना चाहिए तो और ही खुश होंगे। उन्हीं को समझाना चाहिए कि जब तक इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को नहीं समझा है तब तक बच्चों का कल्याण नहीं हो सकता। दुनिया में जयजयकार नहीं हो सकती। बच्चों को सर्विस करने का इशारा दिया जाता है। टीचर है तो अपने कॉलेज में अगर यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी बैठ समझाये तो बच्चे त्रिकालदर्शी बन सकते हैं। और त्रिकालदर्शी बनने से चक्रवर्ती भी बन सकते हैं। जैसे बाप ने तुमको त्रिकालदर्शी, स्वदर्शन चक्रधारी बनाया है तो तुमको फिर औरों को आप समान बनाना है, औरों को समझाना है कि अब यह पुरानी दुनिया बदल रही है। तमोप्रधान दुनिया बदल सतोप्रधान बन रही है। सतोप्रधान बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा है जो सहज राजयोग और स्वदर्शन चक्र का ज्ञान देते हैं। चक्र को समझाना तो बड़ा सहज है। अगर यह चक्र सामने रखा जाए तो भी मनुष्य आकर समझ सकें कि सतयुग में कौन-कौन राज्य करते थे। फिर द्वापर से कैसे अनेक धर्मों की वृद्धि

होती है। ऐसा अच्छी रीति समझाया जाए तो बुद्धि के कपाट जरूर खुलेंगे। यह चक्र सामने रख तुम अच्छी रीति समझा सकते हो। टॉपिक भी रख सकते हो। आओ तो हम तुमको त्रिकालदर्शी बनने का रास्ता बतायें, जिससे तुम राजाओं का राजा बन सकते हो। तुम ब्राह्मण ही इस चक्र को जानते हो तब तो चक्रवर्ती राजा बनते हो। परन्तु बनेंगे वह जो इस चक्र को बुद्धि में फिराते रहेंगे। बाप तो है ही ज्ञान का सागर, वह बैठ बच्चों को सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। और मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ईश्वर सर्वव्यापी कहने से ज्ञान की बात ही नहीं उठती। ईश्वर को जानने का भी कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकते हैं फिर तो भक्ति भी चल न सके। परन्तु जो कुछ कहते हैं वह कुछ समझते नहीं। कच्चे समझा भी नहीं सकेंगे कि सर्वव्यापी कैसे नहीं है। कोई एक ने कह दिया बस सभी ने मान लिया। जैसे कोई ने आदि देव को महावीर कहा तो वह नाम चला दिया। जिसने जो नाम बेसमझी से रखा वह चला आता है। अब बाप बैठ समझाते हैं कि तुम मनुष्य होकर ड्रामा के रचयिता और रचना को नहीं जानते हो, देवताओं की पूजा करते हो परन्तु उन्हीं की बायोग्राफी को नहीं जानते हो तो इसको ब्लाइन्ड फेथ कहा जाता है। इतने देवी-देवता राज्य करके गये हैं तो जरूर वह समझदार थे तब तो पूज्य बने। अब तुम ब्रह्मा मुख वंशावली यह ज्ञान सुनकर समझदार बनते हो। बाकी तो सारी दुनिया को रावण ने जेल में डाल रखा है। यह है रावण का जेल जिसमें सभी शोक वाटिका में पड़े हैं। कान्फ्रेन्स करते रहते हैं कि शान्ति कैसे हो? तो जरूर अशान्ति दुःख है, गोया सभी शोक वाटिका में बैठे हैं। अभी शोक वाटिका से अशोक वाटिका में कोई फट से नहीं जाता है। इस समय कोई भी शान्ति वा सुख की वाटिका में नहीं हैं। अशोक वाटिका कहेंगे सतयुग को, यह तो संगमयुग है तुमको कोई सम्पूर्ण पवित्र कह न सके। हिज होलीनेस कोई बी.के. अपने को कहला नहीं सकते वा लिखवा नहीं सकते। हिज होलीनेस वा हर होलीनेस सतयुग में होते हैं। कलियुग में कहाँ से आये! भल आत्मा यहां पवित्र बनती है परन्तु शरीर भी तो पवित्र चाहिए तब हिज होलीनेस कह सकते। इसलिए बड़ाई लेनी नहीं चाहिए। अभी तुम पुरुषार्थी हो। बाप कहते हैं श्री श्री वा हिज होलीनेस सन्यासियों को भी कह नहीं सकते। भल आत्मा पवित्र बनती है परन्तु शरीर पवित्र कहाँ है? तो अधूरे हुए ना। इस पतित दुनिया में हिज वा हर होलीनेस कोई हो नहीं सकता। वह समझते हैं आत्मा परमात्मा सदैव शुद्ध है परन्तु शरीर भी शुद्ध चाहिए। हाँ, लक्ष्मी-नारायण को कह सकते हैं क्योंकि वहाँ शरीर भी सतोप्रधान तत्वों से बनते हैं। यहाँ तत्व भी तमोप्रधान हैं। इस समय किसी को भी सम्पूर्ण पावन नहीं कहेंगे। ऐसे पवित्र तो छोटे बच्चे भी होते हैं। देवताएं सम्पूर्ण निर्विकारी थे।

तो बाप बैठ समझाते हैं तुम कितने समझदार बन रहे हो। तुमको चक्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान है। परमपिता परमात्मा जो इस चैतन्य झाड़ का बीज है, उनको सारे झाड़ की नॉलेज है, वही तुमको नॉलेज सुना रहे हैं। इस सृष्टि चक्र के ज्ञान पर तुम कोई को भी प्रभावित कर सकते हो। समझाना चाहिए - तुम परमधाम से आकर यहाँ चोला धारण कर एक्ट कर रहे हो। अभी अन्त में सभी को वापिस जाना है फिर आकर अपना पार्ट बजाना है। यहाँ अभी जो पुरुषार्थ करेगा वह ऐसे ही राजे रजवाड़े वा धनवान के पास जन्म लेगा। सभी नम्बरवार पद पाते हैं। नम्बरवार ट्रांसफर होते जायेंगे। यह भी दिखाया हुआ है - जहाँ जीत वहाँ जन्म... अभी इन बातों को उठाया नहीं जाता है। आगे चलकर रोशनी मिलती जायेगी, इतना तो है अभी जो शरीर छोड़ते हैं उनको जरूर अच्छे घर में जन्म मिलेगा। जो बच्चे जास्ती पुरुषार्थ करते हैं उनको खुशी भी जास्ती चढ़ती है। जो सर्विस में तत्पर रहते हैं उन्हीं को नशा रहता है। तुम्हारे सिवाए तो सब अन्धकार में हैं। गंगा स्नान आदि करने से तो कोई के पाप नहीं धुल सकते हैं। योग अग्नि से ही पाप भस्म होते हैं। इस रावण की जेल से छुड़ाने वाला एक बाप ही है तब तो गाते हैं पतित-पावन.. परन्तु अपने को पाप आत्मा समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं कल्प पहले भी इन्हीं का तुम कन्याओं द्वारा ही उद्धार कराया था। गीता में भी लिखा हुआ है परन्तु कोई समझते नहीं हैं। तुम समझा सकते हो - इस पतित दुनिया में कोई भी पावन नहीं है। परन्तु समझाने में भी बड़ी हिम्मत चाहिए। तुम जानते हो अब दुनिया बदल रही है। तुम अब ईश्वर की सन्तान बने हो। यह ब्राह्मण कुल है सबसे ऊँच। तुमको स्वदर्शन चक्र का ज्ञान है। फिर जब विष्णु के कुल में जायेंगे तो तुमको यह ज्ञान नहीं होगा। अभी ज्ञान है इसलिए तुम्हारा नाम रखा है स्वदर्शन चक्रधारी। इस गुह्य बातों को तुम्हारे बिगर कोई नहीं जानते। कहने मात्र तो सब कह देते हैं कि ईश्वर की सब सन्तान हैं परन्तु प्रैक्टिकल में तुम अभी बने हो। अच्छा-

सभी मीठे-मीठे बच्चों को यादप्यार गुडमार्निंग। बाप का फ़र्ज है बच्चों को याद करना और बच्चों का फ़र्ज है बाप को याद करना। परन्तु बच्चे इतना याद नहीं करते, अगर याद करते हैं तो अहो सौभाग्य। अच्छा-मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

### **धारणा के लिए मुख्य सार:-**

- १- सृष्टि चक्र के ज्ञान से स्वयं भी त्रिकालदर्शी और स्वदर्शन चक्रधारी बनना है और दूसरों को भी बनाने की सेवा करनी है।
- २- संगम पर शोक वाटिका से निकल सुख शान्ति की वाटिका में चलने के लिए पवित्र जरूर बनना है।

**वरदान:- बिन्दू रूप बाप की याद से हर सेकण्ड कमाई जमा करने वाले पदमापदमपति भव**

आप बच्चे एक-एक सेकण्ड में पदमों से भी ज्यादा कमाई जमा कर सकते हो। जैसे एक के आगे एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जाता, फिर एक बिन्दी लगाओ तो 100 हो जाता ऐसे एक सेकण्ड बिन्दू रूप बाप को याद करो, सेकण्ड बीता और बिन्दी लग गई, इतनी बड़ी कमाई जमा करने वाले आप बच्चे अभी पदमापदमपति बनते हो जो फिर अनेक जन्म तक खाते रहते हो। ऐसे कमाई करने वाले बच्चों पर बाप को भी नाज़ है।

**स्लोगन:-**

बिगड़े हुए कार्य को, बिगड़े हुए संस्कारों को, बिगड़े हुए मूड को शुभ भावना से ठीक कर देना - यही श्रेष्ठ सेवा है।

### सूचना

1. आप सबको ज्ञात हो कि बापदादा की अति स्नेही दिल्ली शाहदरा सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज प्रेम बहन ने 20 दिसम्बर 2007 को रात्रि 12:30 बजे अपनी पुरानी देह त्याग बापदादा की गोद ली। आप पिछले 50 वर्षों से बापदादा की सेवा में उपस्थित थी। आपकी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेष रुचि थी। आपने अनेक गीत बनाये और गाये हुए हैं। ट्रैफिक कन्ट्रोल के कुछ गीत आपकी संरचना है। 21 दिसम्बर को आपके पार्थिव शरीर को लौकिक-अलौकिक परिवार के मध्य, प्रकृति को अर्पित किया गया।
2. बापदादा के अति लाडले साकार मात-पिता की पालना में पले हुए पुरी भाई (दिल्ली, ओ.आर.सी. की आशा बहन के लौकिक पिता जी) जिन्होंने 1958 में कानपुर से ज्ञान लिया और 1965 में बैंगलोर में अलौकिक सेवाओं के निमित्त बने। बेहद बुद्धि, अटूट निश्चय, तन-मन-धन सफल करते विशाल हृदय से बापदादा की सेवा में तत्पर रहे। लौकिक और अलौकिक प्रवृत्ति का बैलेन्स बनाकर रखा। वर्तमान समय अपनी सर्व लौकिक जिम्मेवारियों से निवृत्त होकर दिल्ली ओ.आर.सी. के निकट रहते थे। 83 वर्ष की आयु पूरी कर 3 जनवरी 2008 को गुरुवार के दिन सवेरे अचानक और सहज अपनी पुरानी देह त्याग बापदादा की गोद ली। 4 जनवरी 2008 को दिल्ली, मधुबन तथा ओ.आर.सी. के अलौकिक परिवार के बीच उनका अन्तिम संस्कार किया गया।